IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020 के परिप्रेक्ष्य में प्राथमिक शिक्षा में अनुभवात्मक अधिगम: चुनौतियाँ, संभावनाएँ एवं प्रभावशीलता का विश्लेषण

लेखक का नाम –सुनील सिंह पंवार

पदनाम –सहायक अध्यापक प्राथमिक

अध्ययन /अध्यापन का विषय –गणित

विभाग का नाम –शिक्षा विभाग

संस्थान का नाम –राजकीय प्राथमिक विद्यालय खोलकण्डी

संस्थान का पता -खोलकण्डी,पो0ओ0-पौखाल ,विकासखण्ड -दुगड्डा ,जनपद -पौड़ी गढ़वाल ,पिन -246144

शोध सार :

राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020 भारतीय शिक्षा व्यवस्था में व्यापक परिवर्तन लाने वाली एक दूरदर्शी नीति है, जिसका प्रमुख उद्देश्य विद्यार्थियों में रचनात्मकता, आलोचनात्मक चिंतन, समस्या-समाधान क्षमता तथा जीवन कौशल का विकास करना है। इस नीति में अनुभवात्मक अधिगम को शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया का एक प्रमुख आधार माना गया है। अनुभवात्मक अधिगम विद्यार्थियों को केवल सैद्धांतिक ज्ञान तक सीमित नहीं रखता, बल्कि उन्हें वास्तविक जीवन की परिस्थितियों, गतिविधियों, परियोजनाओं, प्रयोगों तथा सहयोगात्मक अधिगम के माध्यम से सीखने का अवसर प्रदान करता है।प्राथमिक स्तर पर यह पद्धति विशेष रूप से उपयोगी है क्योंकि बालक प्रत्यक्ष अनुभवों, खेलों, पर्यवेक्षण, संवाद और गतिविधियों के माध्यम से अधिक प्रभावी ढंग से सीखते हैं। अनुभवात्मक अधिगम बच्चों की जिज्ञासा को बढ़ाता है, आत्मविश्वास विकसित करता है तथा सीखने को आनंददायक बनाता है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020 भी रटने की प्रवृत्ति के स्थान पर समझ, कौशल एवं अनुप्रयोग आधारित शिक्षा पर बल देती है।यद्यपि इस पद्धति के अनेक लाभ हैं, फिर भी विद्यालयों में इसके प्रभावी क्रियान्वयन के समक्ष अनेक चुनौतियाँ विद्यमान हैं। संसाधनों की कमी, बड़े छात्र-शिक्षक अनुपात, समय का अभाव, शिक्षकों का अपर्याप्त प्रशिक्षण तथा मूल्यांकन प्रणाली की सीमाएँ प्रमुख बाधाएँ हैं। इसके बावजूद डिजिटल तकनीकों, स्थानीय संसाधनों, शिक्षक नवाचारों तथा समुदाय की सहभागिता के माध्यम से अनुभवात्मक अधिगम को अधिक प्रभावी बनाया जा सकता है।यह शोध-पत्र राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020 के संदर्भ में प्राथमिक शिक्षा में अनुभवात्मक अधिगम की अवधारणा, आवश्यकता, प्रभावशीलता, चुनौतियों एवं भविष्य की संभावनाओं का विश्लेषण प्रस्तुत करता है। अध्ययन का उद्देश्य शिक्षकों, नीति-निर्माताओं एवं शोधकर्ताओं को अनुभवात्मक अधिगम के प्रभावी क्रियान्वयन हेतु उपयोगी सुझाव प्रदान करना है।

प्रमुख शब्द: राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020, अनुभवात्मक अधिगम, प्राथमिक शिक्षा, गतिविधि-आधारित शिक्षण, अधिगम परिणाम, नवाचार, FLN.

1. भूमिका:

भारत की शिक्षा व्यवस्था निरंतर परिवर्तन के दौर से गुजर रही है। वैश्वीकरण, सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी तथा 21वीं सदी की कौशल आवश्यकताओं ने पारंपरिक शिक्षण पद्धतियों को पुनर्विचार के लिए प्रेरित किया है। वर्तमान समय में शिक्षा का उद्देश्य केवल ज्ञान प्रदान करना नहीं, बल्कि विद्यार्थियों को जीवनोपयोगी कौशल, सृजनात्मक सोच, समस्या-समाधान क्षमता तथा सामाजिक उत्तरदायित्व से युक्त बनाना है। इसी दृष्टिकोण को ध्यान में रखते हुए भारत सरकार ने राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020 लागू की, जिसने शिक्षा को अधिक समावेशी, लचीला, कौशल-आधारित तथा विद्यार्थी-केंद्रित बनाने पर बल दिया।राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020 में स्पष्ट रूप से कहा गया है कि शिक्षण प्रक्रिया रटने पर आधारित न होकर अनुभव, गतिविधि, परियोजना, अन्वेषण तथा संवाद पर आधारित होनी चाहिए। यही अनुभवात्मक अधिगम का मूल आधार है।अनुभवात्मक अधिगम वह प्रक्रिया है जिसमें विद्यार्थी प्रत्यक्ष अनुभवों, गतिविधियों, प्रयोगों, भ्रमण, परियोजनाओं, खेलों तथा वास्तविक जीवन की समस्याओं के समाधान के माध्यम से ज्ञान का निर्माण करते हैं। इसमें शिक्षक ज्ञान का एकमात्र स्रोत न होकर मार्गदर्शक एवं सह-अधिगामी की भूमिका निभाता है।प्राथमिक स्तर पर अनुभवात्मक अधिगम का महत्व और भी अधिक बढ़ जाता है क्योंकि इस अवस्था के बच्चे स्वाभाविक रूप से जिज्ञासु होते हैं। वे देखकर, छूकर, खेलकर, प्रयोग करके तथा समूह में कार्य करके अधिक प्रभावी ढंग से सीखते हैं। यदि उन्हें वास्तविक जीवन से जुड़े अनुभव उपलब्ध कराए जाएँ, तो उनकी सीख स्थायी, सार्थक एवं आनंददायक बन जाती है।

2. अध्ययन की आवश्यकता:

राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020 ने अनुभवात्मक अधिगम को विद्यालयी शिक्षा का आधार बनाने की परिकल्पना प्रस्तुत की है। यद्यपि नीति में इस अवधारणा को व्यापक महत्व दिया गया है, किन्तु अधिकांश प्राथमिक विद्यालयों में अभी भी पारंपरिक व्याख्यान एवं रटने पर आधारित शिक्षण पद्धति का प्रभुत्व दिखाई देता है। इससे विद्यार्थियों में अवधारणात्मक समझ, रचनात्मकता तथा व्यावहारिक कौशल का अपेक्षित विकास नहीं हो पाता।ऐसी स्थिति में यह आवश्यक हो जाता है कि अनुभवात्मक अधिगम की प्रभावशीलता, उसके क्रियान्वयन की चुनौतियों तथा भविष्य की संभावनाओं का समग्र विश्लेषण किया जाए। यह अध्ययन शिक्षकों, विद्यालय प्रमुखों तथा नीति-निर्माताओं को अनुभवात्मक अधिगम को विद्यालय स्तर पर अधिक प्रभावी ढंग से लागू करने के लिए उपयोगी दिशा प्रदान करेगा।

3. अध्ययन के उद्देश्य:

प्रस्तुत अध्ययन के प्रमुख उद्देश्य निम्नलिखित हैं—

1. राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020 के परिप्रेक्ष्य में अनुभवात्मक अधिगम की अवधारणा का विश्लेषण करना।
2. प्राथमिक शिक्षा में अनुभवात्मक अधिगम की आवश्यकता एवं उपयोगिता का अध्ययन करना।
3. अनुभवात्मक अधिगम की प्रमुख शिक्षण रणनीतियों का वर्णन करना।
4. अनुभवात्मक अधिगम के क्रियान्वयन में आने वाली चुनौतियों की पहचान करना।
5. प्राथमिक शिक्षा में अनुभवात्मक अधिगम की संभावनाओं एवं प्रभावशीलता का विश्लेषण करना।
6. अनुभवात्मक अधिगम के प्रभावी क्रियान्वयन हेतु व्यावहारिक सुझाव प्रस्तुत करना।

4. शोध प्रश्न:

अध्ययन को दिशा प्रदान करने हेतु निम्नलिखित शोध प्रश्न निर्धारित किए गए हैं—

1. अनुभवात्मक अधिगम की मूल अवधारणा क्या है?
2. राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020 में अनुभवात्मक अधिगम को किस प्रकार महत्व दिया गया है?
3. प्राथमिक स्तर पर अनुभवात्मक अधिगम विद्यार्थियों के समग्र विकास में किस प्रकार सहायक है?
4. अनुभवात्मक अधिगम के प्रभावी क्रियान्वयन में कौन-कौन सी प्रमुख चुनौतियाँ हैं?
5. भविष्य में अनुभवात्मक अधिगम को अधिक प्रभावी बनाने के लिए कौन-सी रणनीतियाँ अपनाई जा सकती हैं?

5. अनुभवात्मक अधिगम की अवधारणा एवं सैद्धांतिक आधार:

अनुभवात्मक अधिगम वह शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया है जिसमें विद्यार्थी प्रत्यक्ष अनुभवों, गतिविधियों, प्रयोगों, निरीक्षण, समस्या-समाधान, परियोजनाओं तथा सामाजिक सहभागिता के माध्यम से ज्ञान का निर्माण करते हैं। इसमें सीखना केवल सूचना प्राप्त करना नहीं, बल्कि अनुभवों पर चिंतन, विश्लेषण और उनके आधार पर नए ज्ञान का निर्माण करना है।

अनुभवात्मक अधिगम का सबसे महत्वपूर्ण सिद्धांत अमेरिकी शिक्षाविद डेविड ए. कोलब द्वारा प्रस्तुत किया गया। कोलब के अनुसार सीखना एक सतत चक्र है जिसमें चार प्रमुख चरण होते हैं—

प्रत्यक्ष अनुभव: विद्यार्थी किसी गतिविधि, प्रयोग या वास्तविक परिस्थिति का अनुभव प्राप्त करता है।

चिंतन एवं अवलोकन: विद्यार्थी उस अनुभव पर विचार करता है और उससे प्राप्त सीख का विश्लेषण करता है।

अमूर्त अवधारणा निर्माण : अनुभवों के आधार पर सिद्धांत एवं अवधारणाएँ विकसित होती हैं।

सक्रिय प्रयोग : विद्यार्थी नई परिस्थितियों में अर्जित ज्ञान एवं कौशल का प्रयोग करता है।

इस चक्र के माध्यम से अधिगम अधिक स्थायी, अर्थपूर्ण तथा व्यवहारिक बनता है।

6. राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020 एवं अनुभवात्मक अधिगम:

राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020 ने विद्यालयी शिक्षा में व्यापक परिवर्तन का मार्ग प्रशस्त किया है। नीति में स्पष्ट रूप से कहा गया है कि शिक्षा का उद्देश्य केवल तथ्यों का स्मरण कराना नहीं, बल्कि विद्यार्थियों में रचनात्मकता, आलोचनात्मक चिंतन, सहयोगात्मक कार्य, संप्रेषण कौशल तथा समस्या-समाधान क्षमता का विकास करना है।इसी उद्देश्य की पूर्ति के लिए नीति अनुभवात्मक अधिगम को शिक्षण का आधार बनाने पर बल देती है। इसके अंतर्गत निम्न प्रमुख बिंदुओं को विशेष महत्व दिया गया है—

गतिविधि-आधारित शिक्षण

खेल-आधारित शिक्षण

परियोजना-आधारित अधिगम

कला-संयुक्त शिक्षण

स्थानीय परिवेश एवं संसाधनों का उपयोग

कहानी, संवाद एवं भूमिका-अभिनय

सहयोगात्मक अधिगम

तकनीक समर्थित शिक्षण

राष्ट्रीय शिक्षा नीति का मानना है कि जब विद्यार्थी स्वयं खोजते हैं, प्रश्न पूछते हैं, प्रयोग करते हैं और निष्कर्ष निकालते हैं, तब अधिगम अधिक प्रभावी एवं स्थायी बनता है।

7. प्राथमिक शिक्षा में अनुभवात्मक अधिगम की आवश्यकता

प्राथमिक स्तर बालकों के संज्ञानात्मक, भावनात्मक, सामाजिक एवं भाषाई विकास का आधार होता है। इस अवस्था में बच्चे स्वाभाविक रूप से जिज्ञासु, सक्रिय तथा खोजी प्रवृत्ति के होते हैं। इसलिए उन्हें केवल व्याख्यान द्वारा पढ़ाने की अपेक्षा अनुभवों के माध्यम से सीखने के अवसर प्रदान करना अधिक प्रभावी सिद्ध होता है।

अनुभवात्मक अधिगम की आवश्यकता निम्न कारणों से अत्यंत महत्वपूर्ण है—

बच्चों में सीखने के प्रति रुचि एवं उत्साह उत्पन्न होता है।

अवधारणाएँ स्पष्ट एवं दीर्घकालिक रूप से स्मरण रहती हैं।

तार्किक एवं आलोचनात्मक चिंतन का विकास होता है।

सहयोग, नेतृत्व तथा संप्रेषण कौशल विकसित होते हैं।

आत्मविश्वास एवं समस्या-समाधान क्षमता में वृद्धि होती है।

सीखने की प्रक्रिया आनंददायक एवं तनावमुक्त बनती है।

स्थानीय परिवेश से जुड़ाव बढ़ता है तथा जीवनोपयोगी कौशल विकसित होते हैं।

निपुण भारत मिशन एवं बुनियादी साक्षरता एवं संख्यात्मकता के लक्ष्यों की प्राप्ति में सहायता मिलती है।

प्राथमिक कक्षाओं में गणित, भाषा एवं पर्यावरण अध्ययन जैसे विषयों को खेल, प्रयोग, स्थानीय वस्तुओं, शैक्षिक भ्रमण, भूमिका-अभिनय, कहानी, समूह कार्य तथा शिक्षक-निर्मित शिक्षण-अधिगम सामग्री के माध्यम से अत्यंत प्रभावी बनाया जा सकता है। इससे विद्यार्थी केवल परीक्षा के लिए नहीं, बल्कि जीवन के लिए सीखते हैं।

8. प्राथमिक शिक्षा में अनुभवात्मक अधिगम की प्रभावशीलता:

अनुभवात्मक अधिगम केवल एक शिक्षण पद्धति नहीं, बल्कि शिक्षा के प्रति एक समग्र दृष्टिकोण है। यह विद्यार्थियों को निष्क्रिय श्रोता के स्थान पर सक्रिय शिक्षार्थी बनाता है। प्राथमिक स्तर पर बच्चे अपनी इंद्रियों, गतिविधियों और अनुभवों के माध्यम से सबसे प्रभावी ढंग से सीखते हैं। इसलिए जब शिक्षण को खेल, प्रयोग, परियोजना, स्थानीय संसाधनों, समूह कार्य और वास्तविक जीवन की परिस्थितियों से जोड़ा जाता है, तो अधिगम अधिक अर्थपूर्ण और स्थायी बन जाता है।राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020 भी इस बात पर बल देती है कि बच्चों में केवल विषयगत ज्ञान ही नहीं, बल्कि आलोचनात्मक चिंतन, सृजनात्मकता, सहयोग, संप्रेषण और समस्या-समाधान जैसे कौशल विकसित किए जाएँ। अनुभवात्मक अधिगम इन सभी उद्देश्यों की पूर्ति में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

प्राथमिक विद्यालयों में अनुभवात्मक अधिगम अपनाने से निम्नलिखित सकारात्मक परिवर्तन देखे जा सकते हैं—

विद्यार्थियों की कक्षा में सक्रिय सहभागिता बढ़ती है।

सीखने के प्रति जिज्ञासा और आत्मप्रेरणा विकसित होती है।

कठिन विषयों की अवधारणाएँ सरल एवं स्पष्ट हो जाती हैं।

समूह में कार्य करने की क्षमता तथा सामाजिक व्यवहार में सुधार होता है।

बच्चों का आत्मविश्वास एवं आत्म-अभिव्यक्ति बढ़ती है।

सीखने के परिणाम में सुधार होता है।

विद्यालय में उपस्थिति तथा सीखने के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण विकसित होता है।

विशेष रूप से गणित, भाषा एवं पर्यावरण अध्ययन जैसे विषयों में स्थानीय वस्तुओं, शैक्षिक खेलों, कहानी, भूमिका-अभिनय, प्रयोग तथा शैक्षिक भ्रमण जैसी गतिविधियाँ बच्चों के अधिगम को अधिक प्रभावी बनाती हैं। अनुभवात्मक अधिगम बच्चों को केवल उत्तर याद करना नहीं सिखाता, बल्कि उत्तर तक पहुँचने की प्रक्रिया को समझने की क्षमता भी विकसित करता है।

9. अनुभवात्मक अधिगम के क्रियान्वयन में प्रमुख चुनौतियाँ:

यद्यपि अनुभवात्मक अधिगम के अनेक लाभ हैं, फिर भी भारतीय प्राथमिक विद्यालयों में इसके प्रभावी क्रियान्वयन के समक्ष अनेक व्यावहारिक चुनौतियाँ विद्यमान हैं।

(1) पारंपरिक शिक्षण पद्धति का प्रभाव

अनेक विद्यालयों में अभी भी रटने एवं व्याख्यान आधारित शिक्षण को प्राथमिकता दी जाती है। इससे बच्चों को सक्रिय रूप से सीखने के अवसर सीमित हो जाते हैं।

(2) शिक्षकों का सीमित प्रशिक्षण

अनुभवात्मक अधिगम को सफल बनाने के लिए शिक्षकों को गतिविधि-आधारित योजना, मूल्यांकन एवं कक्षा प्रबंधन का प्रशिक्षण आवश्यक है। पर्याप्त प्रशिक्षण के अभाव में कई शिक्षक इस पद्धति का प्रभावी उपयोग नहीं कर पाते।

(3) संसाधनों की कमी

ग्रामीण एवं दूरस्थ विद्यालयों में शिक्षण-अधिगम सामग्री, प्रयोगात्मक संसाधनों तथा डिजिटल सुविधाओं का अभाव देखा जाता है। इससे अनुभवात्मक गतिविधियों का विस्तार सीमित हो जाता है।

(4) समय एवं पाठ्यक्रम का दबाव

पाठ्यक्रम को निर्धारित समय में पूरा करने का दबाव कई बार शिक्षकों को गतिविधि-आधारित शिक्षण अपनाने से रोकता है।

(5) बड़ी कक्षाएँ

अधिक छात्र संख्या होने पर प्रत्येक विद्यार्थी को गतिविधियों में समान रूप से शामिल करना चुनौतीपूर्ण हो जाता है।

(6) मूल्यांकन प्रणाली

यदि परीक्षा केवल लिखित स्मृति-आधारित प्रश्नों पर केंद्रित रहेगी, तो शिक्षक और विद्यार्थी दोनों अनुभवात्मक अधिगम को अपेक्षित महत्व नहीं दे पाएँगे। मूल्यांकन को भी कौशल, सहभागिता, रचनात्मकता और समस्या-समाधान पर आधारित बनाना होगा।

10. संभावनाएँ एवं नवाचार:

इन चुनौतियों के बावजूद अनुभवात्मक अधिगम की संभावनाएँ अत्यंत व्यापक हैं।

सबसे पहले, राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020 और राष्ट्रीय पाठ्यचर्या रूपरेखा (NCF–2023) दोनों ही गतिविधि-आधारित एवं विद्यार्थी-केंद्रित शिक्षण को प्रोत्साहित करते हैं। इससे विद्यालयों को नवाचार अपनाने के लिए नीति स्तर पर समर्थन प्राप्त होता है।

दूसरे, निपुण भारत मिशन के अंतर्गत भाषा एवं गणित के बुनियादी कौशल विकसित करने हेतु खेल, गतिविधियों और स्थानीय संसाधनों पर आधारित शिक्षण को बढ़ावा दिया जा रहा है। इससे अनुभवात्मक अधिगम को विद्यालयी व्यवस्था में अधिक व्यवस्थित रूप से लागू किया जा सकता है।

तीसरे, डिजिटल तकनीक, स्मार्ट कक्षाएँ, शैक्षिक वीडियो, वर्चुअल प्रयोगशालाएँ तथा कृत्रिम बुद्धिमत्ता आधारित शिक्षण उपकरण बच्चों के अनुभवों का दायरा बढ़ा सकते हैं। हालाँकि तकनीक का उपयोग शिक्षक का विकल्प नहीं, बल्कि सहयोगी साधन होना चाहिए।

चौथे, स्थानीय परिवेश स्वयं एक जीवंत प्रयोगशाला है। खेत, जंगल, नदी, बाज़ार, ग्राम पंचायत, स्वास्थ्य केंद्र, डाकघर और स्थानीय कारीगर बच्चों के लिए वास्तविक जीवन के सीखने के उत्कृष्ट स्रोत बन सकते हैं।

11. लेखक का विश्लेषण एवं विमर्श:

लेखक का मानना है कि अनुभवात्मक अधिगम केवल शिक्षण की एक तकनीक नहीं, बल्कि शिक्षा के दर्शन में परिवर्तन का प्रतीक है। यदि शिक्षा का उद्देश्य केवल परीक्षा में अंक प्राप्त करना है, तो रटने की प्रवृत्ति पर्याप्त प्रतीत हो सकती है। किंतु यदि उद्देश्य जागरूक, संवेदनशील, सृजनात्मक और उत्तरदायी नागरिक तैयार करना है, तो अनुभवात्मक अधिगम अनिवार्य बन जाता है।प्राथमिक विद्यालयों में यह आवश्यक नहीं कि प्रत्येक गतिविधि महँगे उपकरणों से ही कराई जाए। शिक्षक स्थानीय संसाधनों, प्राकृतिक वस्तुओं, लोकज्ञान, खेलों, कहानियों और दैनिक जीवन की परिस्थितियों का उपयोग करके भी प्रभावी अनुभवात्मक शिक्षण कर सकते हैं। वास्तव में एक नवाचारी शिक्षक सीमित संसाधनों में भी उत्कृष्ट अधिगम वातावरण निर्मित कर सकता है।भविष्य में शिक्षक शिक्षा कार्यक्रमों, सतत व्यावसायिक विकास, विद्यालय नेतृत्व, समुदाय की सहभागिता तथा डिजिटल नवाचारों के माध्यम से अनुभवात्मक अधिगम को अधिक प्रभावी बनाया जा सकता है। यदि नीति, शिक्षक, अभिभावक और समुदाय मिलकर कार्य करें, तो प्राथमिक शिक्षा वास्तव में बाल-केंद्रित, आनंददायक और जीवनोपयोगी बन सकती है।

12. निष्कर्ष:

राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020 ने भारतीय शिक्षा को ज्ञान-केंद्रित दृष्टिकोण से आगे बढ़ाकर कौशल, मूल्य एवं अनुभव-केंद्रित शिक्षा की दिशा प्रदान की है। अनुभवात्मक अधिगम इस परिवर्तन का प्रमुख आधार है। यह बच्चों में जिज्ञासा, रचनात्मकता, समस्या-समाधान क्षमता, सहयोग तथा आत्मविश्वास का विकास करता है। यद्यपि संसाधनों की कमी, प्रशिक्षण का अभाव तथा पारंपरिक मूल्यांकन जैसी चुनौतियाँ विद्यमान हैं, फिर भी उचित योजना, शिक्षक प्रशिक्षण, स्थानीय संसाधनों के उपयोग तथा तकनीक के संतुलित समावेशन से इन चुनौतियों का प्रभावी समाधान संभव है।

अंततः कहा जा सकता है कि अनुभवात्मक अधिगम केवल सीखने की एक विधि नहीं, बल्कि ऐसी शैक्षिक संस्कृति है जो प्रत्येक बालक को सीखने का अवसर, आत्मविश्वास और जीवन से जुड़ा ज्ञान प्रदान करती है। यही राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020 की मूल भावना भी है।

13. सुझाव:

1. सभी प्राथमिक शिक्षकों को अनुभवात्मक अधिगम पर नियमित प्रशिक्षण दिया जाए।
2. प्रत्येक विद्यालय में स्थानीय संसाधनों पर आधारित टी0एल0एम0 बैंक विकसित किया जाए।
3. परियोजना एवं गतिविधि-आधारित मूल्यांकन को बढ़ावा दिया जाए।
4. विद्यालय–समुदाय सहभागिता को मजबूत बनाया जाए।
5. डिजिटल संसाधनों का संतुलित एवं उद्देश्यपूर्ण उपयोग किया जाए।
6. शिक्षक नवाचारों का दस्तावेजीकरण एवं प्रसार किया जाए।
7. विद्यालयों में बच्चों को प्रश्न पूछने, प्रयोग करने और स्वयं सीखने के अवसर नियमित रूप से प्रदान किए जाएँ।

14.संदर्भ:

1.भारत सरकार. राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020. शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार, 2020, पृ . 12-13.

2.राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद। स्कूली शिक्षा के लिए राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा (एनसीएफ-एसई 2023)। नई दिल्ली: एन0सी0ई0आर0टी0, 2023,पृ . 19.

3.राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद । मूलभूत साक्षरता और संख्यात्मकता: एक शिक्षक की पुस्तिका। नई दिल्ली: एन0सी0ई0आर0टी0, 2022,पृ. 40-41.

4. कोल्ब, डी. ए. अनुभवात्मक शिक्षा: सीखने और विकास के स्रोत के रूप में अनुभव। प्रेंटिस-हॉल, 1984, पृ. 38-40.

5.डेवी, जे. अनुभव और[5] शिक्षा। न्यूयॉर्क: मैकमिलन, 1938, पृ. 20-27.

6.पियागेट, जे. द साइकोलॉजी ऑफ द चाइल्ड । बेसिक बुक्स, 1972, पृ. 1-12.

7. वायगोत्स्की, एल.एस. .समाज में मन: उच्च मनोवैज्ञानिक प्रक्रियाओं का विकास । हार्वर्ड हार्वर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, 1978, पृ. 1-20.

8.ब्रूनर, जे.एस. निर्देश के एक सिद्धांत की ओर । हार्वर्ड हार्वर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, 1966, पृ. 1-20.

9.शिक्षा मंत्रालय. निपुण भारत: समझ और संख्यात्मकता के साथ पढ़ने में दक्षता के लिए राष्ट्रीय पहल। भारत सरकार, 2021, पृ. 40-41.

10.यूनेस्को । एक साथ हमारे भविष्य की पुनर्कल्पना: शिक्षा के लिए एक नया सामाजिक अनुबंध । यूनेस्को प्रकाशन, 2021, पृ. 51-60.